परमपूज्य श्री परमहंस जी महाराज का कृपाप्रसाद
स्वामी श्री अड़गड़ानन्द जी द्वारा रचित 'यथार्थ गीता'

बन्धुओ!

नेपाल एवं भारत के पास दो महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ नहीं हैं - एक सर्वमान्य धर्मशास्त्र और दूसरी धर्म की बोधगम्य व्याख्या, जोगरीबकीझोपड़ीसे लेकर महलों तक एक-जैसा बोध करा सके, उत्साह और विश्वास दिला सके।

गीता मज़हबमुक्तहै; क्योंकिआजके प्रचलितमज़हबोंमेंसेश्रीकृष्णकाल मेंकोईनहींथा।साम्प्रदायिकमत-मतान्तरश्रीकृष्णकेडेढ़-दोहजारवर्ष पश्चात् आरम्भ हुए। अतःगीता को स्वीकार कर आप ईश्वरीय वाणी के प्रथमसंकलन को उसकेमूलरूपमेंस्वीकारकररहेहैं।

लगभग पाँचहजारवर्षपूर्वसृजितगीताकीआजसंसारमेंसाढ़ेसात हजार से अधिकटीकाएँहैं, किन्तुकिसीभीटीकामेंयह नहींबताया गया कि गीतोक्त कर्म क्या है? यज्ञ तथा वर्ण क्या है? युद्धस्थान में सैन्यनिरीक्षणकरअर्जुनयुद्धकानिर्णयछोड़चुकाथा।उसहत्प्रभ अर्जुन कोकर्मकी शिक्षादेकरभगवान् श्रीकृष्ण नेउसेकर्म-पथपर चला भी दिया।अतःगीताकामहत्त्वकर्मकीव्याख्यापरआधारितहै। इसी उद्देश्यसे 'यथार्थगीता' आपलोगोंकेसमक्षप्रस्तुतकीगईहै

गीता मनुष्य मात्र के लिए है। 'अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्।' (९/३३) अर्जुन! तू सुखरहित, क्षणभंगुर किन्तु दुर्लभ मनुष्य-शरीर को पाकर मेरा भजन कर। अर्थात् भजन का अधिकार मनुष्य-शरीरधारीकोहै।

'यथार्थगीता' केआकर्षक विषय

'यथार्थगीता' काआकर्षकविषय 'वर्ण' है। यह आराधना की एकविधि-विशेष है जिसको चार श्रेणियोंमेंबाँटा गया है। येहैं-ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। यह साधक का ऊँचा-नीचा स्तर हैनकिजाति।

'यथार्थगीता' में 'यज्ञ' को साधना की विशेष क्रिया बताया गया है और 'कर्म' के विषय में कहा गया कि यज्ञ को कार्यरूप देना हीकर्महै।

श्रीकृष्ण ने सम्पूर्ण गीता में बार-बारएकही 'सत्य' कोदृढ़ाया कि आत्मा हीसत्यहै,यहीपरमसत्य है। सम्पूर्णभूतादिकोंकेशरीर नाशवान् हैं।

'सनातनधर्म' परमात्मा सेमिलानेवाली क्रिया है। 'युद्ध' को कहा गया कि यह दैवी एवं आसुरीसम्पदाओं कासंघर्षहै, जो अन्तःकरण की दो प्रवृत्तियाँ हैं। इन दोनों का मिलना परिणाम है। 'युद्ध-स्थान' मानव-शरीर और मनसहितइन्द्रियोंकोबतायागया।

'देवता' हृदय-देश में परमदेव का देवत्व अर्जित करानेवाले गुणों का समूह है। बाह्य देवताओंकीपूजामूढ़बुद्धिकीदेनहै।

'अवतार' हृदय-देश में होता है, बाहर भूखण्डों मेंकल्पनामात्रहै।

एकमात्रपरात्पर ब्रह्महीं 'पूजनीय देव' है। उसे खोजने का स्थान हृदय-देश है। उसकी प्राप्ति का स्रोत अव्यक्त स्वरूप में स्थित प्राप्तिवाले महापुरुषोंकेद्वाराहै।

'यथार्थगीता' में 'धर्म' कास्वरूप

योगेश्वर श्रीकृष्ण के अनुसार असत् वस्तु का अस्तित्वनहीं है और सत्‌काकभी अभावनहीं है। परमात्मा ही सत्य है, शाश्वत है। अजर, अमर, अपरिवर्तनशील और सनातन है; किन्तु वह परमात्मा अचिन्त्य और अगोचर है, चित्त कीतरंगोंसेपरेहै।चित्तकानिरोधकरकेउस परमात्मा को पाने की विधि-विशेष का नाम कर्महै।इसकर्मकोकार्यरूपदेनाहीधर्महै।

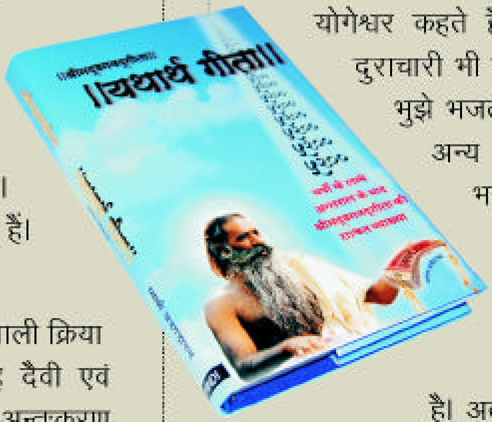

धर्म में प्रवेश का अधिकार

योगेश्वर कहते हैं- अर्जुन! अत्यन्त दुराचारी भी यदि अनन्य भाव से मुझे भजता है, मुझे छोड़कर अन्य किसी को नहीं भजता, तो वह शीघ्र ही धर्मात्मा हो जाता है।उसकी आत्मा धर्म से संयुक्त हो जाती है। अतः एक परमात्मा के प्रति समर्पित व्यक्ति हीधार्मिकहै।

सन्तसबएक

संसार केसभीमहापुरुषएकहैं।चाहे वहराम रहे हों या कृष्ण, ईसा रहे हों या जरथुस्त्र, मुहम्मदरहेहोंयागुरुनानक- सभी नेएक ही मूलबिन्दुकास्पर्श कर स्वरूप को प्राप्तकिया। ऐसी अवस्था को प्राप्त महापुरुष का शरीर मकान मात्र रह जाता है। गॉड, खुदा, ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्म एक ही परमात्मा के पर्याय हैं। महापुरुषों के पश्चात् उनके अनुयायी अपना सम्प्रदाय बनाकर संकुचित हो जाते हैं। किसी महापुरुष केपीछेचलनेवाले यहूदीहोजातेहैं तोकिसीकेअनुयायीईसाई,मुसलमानआदि।

'यथार्थगीता' काउद्‌घोष

'यथार्थगीता' काउद्‌घोषहैकिआत्माएकहै। संयम के द्वारा उसे प्राप्त करो। जिसकी विधि नियत कर्म है। एकेश्वरवाद का यह सन्देश महापुरुषोंने पहलेहृदयमेंध्यानकीस्थितिमें पाया कि

केवल एक परमात्मा ही सत्य है। इसे विश्व के कोने-कोने में फैलाने वाले महापुरुषगीता के हीसन्देशवाहकहैं।

यदि गीता प्रमुखशास्त्रकेरूपमेंप्रसारितकर सब बच्चों को पढ़ा दी जाय तो जब वे कर्म-क्षेत्र में उतरेंगे, एकता, समानता, भेदभाव, जाति-पाँति से मुक्त तथा एक सर्वशक्तिमान् परमात्मा की सन्तान के रूप में निकलेंगे और आपको अखण्ड गरिमासेओत-प्रोत कर देंगे। उनमें एकता रहेगी। उन्हें कोई नहीं भरमा सकेगा। देश या संस्था के नाम पर एकता बनाये रखने के प्रयास में अरबों रुपये खर्च करने पर भी सरकार को जो सफलता नहीं मिल पा रही है, वह गीता के माध्यम से स्वयंसिद्धहै।

आदिशास्त्रगीता

विश्व का आदिशास्त्र गीता है। इसके अध्याय चारमेंभगवान्‌श्रीकृष्णकहतेहैं, ''अर्जुन!इस अविनाशी योग को मैंनेकल्प के आदि में सूर्य केप्रतिकहाथा।सूर्यनेइसअविनाशीयोगको मनु के प्रति कहा। मनु ने इक्ष्वाकु के प्रति कहा। इक्ष्वाकु से राजर्षियों ने जाना और यह अविनाशी योग इस महत्त्वपूर्ण काल से इस धरती पर लोप हो गया था। वही मैं अब तेरे प्रति कहनेजारहाहूँ,क्योंकितूमेराप्रियभक्त और अनन्य सखा है। सृष्टि के प्रवर्तक मनु के समक्ष वेदों का आविर्भाव हुआ था, किन्तुगीता काअविनाशी योग मनु के पिता सूर्य से कहा गया।इसप्रकारगीताअविनाशी योग पद्मनाभ भगवान् के श्रीमुख से पहले प्रसारित हुआ, उसके पश्चात् वेद मनु के समक्ष प्रसारित हुए। वेदज्ञाता मनु, गीतोक्त अविनाशी योग के संवाहक मनु, जिसमें ईश्वर एक, प्राप्ति का साधन एक तथा उसे प्राप्त करने का अधिकार सबको एक जैसा है, वह भेदभावभरी स्मृति लिखकर समाज के अन्दर दरार कैसे डाल सकताहै?

रामचरितमानस में है, 'स्वायंभू मनु अरु सतरूपा। जिन्हते भै नर सृष्टि अनूपा।' महाराज मनु से अनुपम सृष्टि हुई। जिसकी कोई उपमा नहीं, ऐसी परम पावन सृष्टि हुई! एक ही माता-पिता की सन्तान उस अनुपम, परम पावन सृष्टि में कोई अत्यन्त पावन और कोईअत्यन्त घृणितकैसेहोगया?

देवदुर्लभ मानव-तन की सार्थकता मात्र ईश्वर की प्राप्ति केलिए है। गीता के सन्देश केज्ञाता मनु किसी मानव तन को अस्पृश्य कैसे कह सकतेहैं?गीता,अध्याय ९/३३।

प्रतीत होता है कि इन महापुरुषों के प्रति जनमानस की अटूट श्रद्धा देखकर जनसाधारण को शिक्षा से वंचित रख सत्ताप्राप्त बुद्धिजीवियों ने इन महापुरुषों के नाम पर कथित स्मृतियों द्वारा सामाजिक व्यवस्थाओंको धर्मकीसंज्ञादेकरचलादिया, जिनका इन महापुरुषों से कुछ भी लेना-देना नहींहै।